Shri Parameshvara Ashtakam

श्रीपरमेश्वराष्टकम्

Document Information

Text title : Shri Parameshvara Ashtakam

File name : parameshvarAShTakam.itx

Category : shiva, aShTaka

Location : doc_shiva

Proofread by : Mohan Chettoor, Aruna Narayanan

Latest update : December 11, 2022

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

June 29, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीपरमेश्वराष्टकम्

पङ्कजासनपद्मलोचनसद्गुरोऽतुलपावन
वैभवाश्रितपारिजातक पाहि मां परमेश्वर ।
कामितार्थदपादपङ्कज कालकाल जगद्गुरो
कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ १॥

कारणत्रयमूल बालशशाङ्कखण्डशिरोमणे
कार्मुकीकृतशीतगुम्फधराधरेन्द्र जगन्मणे ।
लोचनीकृतशीतरश्मि कृपीटयोनि नभोमणे
कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ २॥

कैटभारिशिलीमुखातुलकाश्यपीरथ धूर्जटे
कल्पितावस कामितार्थप्रदान गौरनदीतटे ।
व्यालभूषणजालशोभित व्याघ्रचर्मलसत्कटे
कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ ३॥

वीतिहोत्रसुतीर्थतीरविहार विश्वधुरन्धर
वीरवर्य विरिञ्चिसन्नुत वृक्षरूपकलेवर ।
नीतिपेशलमानसाम्बुजनित्यवास महाप्रभो
कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ ४॥

विध्यदृष्टसुशीर्षशोभित विष्णवदृश्यपदाम्बुज
निर्जरद्रुमपुष्पजालसुगन्धितस्वदिगन्तरे ।
मित्रवह्निशशीमरुज्जलयज्वखावनिकाकृते
कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ ५॥

कालनीरदनीलकन्धर शूलपाशधराद्य मां
पालयाखिलवैभवाजकपालभृत्करपङ्कज ।
कालगर्वहरान्धकान्तक कृत्तिवासक धूर्जटे
कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ ६॥

कुन्दभूरुहमूलमृत् तव जन्ममृत्युजराधिहा
 कोटिजन्मकृताघसंहृतिदीक्षिता भवभेषजी ।
तादृगद्भुतकुन्दभूरुहदर्शनादपवर्गकृत्
 कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ ७॥

नामरूपविहीन निर्गुण निष्कलङ्क महामहः
 प्राणनाथ परात्पराच्युत कारणत्रयकारण ।
नादबिन्दुकलास्वरूप सहस्रपत्रनिकेतन
 कुन्दभूरुहमन्दिरेश्वर सन्ददस्व मदीप्सितम् ॥ ८॥

पर्वतेन्द्रसुताकृतं परमेश्वराष्टकमद्भुतं
 पावनं परमार्थदं परमात्मनायकसन्निधौ ।
भक्तियुक्तमनाः पठेद्यदि दुर्लभं परमं पदं
 प्राप्य निर्वृतिमेत्य शाश्वत एव तत्र वसेदसौ ॥ ९॥

इति पार्वतीकृतं श्रीपरमेश्वराष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Mohan Chettoor, Aruna Narayanan

Shri Parameshvara Ashtakam

pdf was typeset on June 29, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*